घड़ा पाप का भर रहा

(लम्बी तेवरी–तेवर शतक)



रमेशराज

घड़ा पाप का भर रहा

लम्बी तेवरी (तेवर-शतक)

तेवरीकार-रमेशराज

प्रथम संस्करण-२०१२, मूल्य-४० रुपये, सर्वाधिकार-लेखकाधीन
सार्थक-सृजन प्रकाशन, 15/109, ईसानगर
निकट-थाना सासनी गेट, अलीगढ़ (उ.प्र.)
मोबा.- 09634551630

परिचय



रमेशराज

पूरा नाम-रमेशचन्द्र गुप्ता
जन्म-15 मार्च 1954, गांव-एसी, अलीगढ़
शिक्षा-एम.ए. हिन्दी, एम.ए. भूगोल
सम्पादन-तेवरीपक्ष (त्रैमा.)
सम्पादित कृतियां 1. अभी जुबां कटी नहीं (तेवरी-संग्रह) 2. कबीर ज़िन्दा है (तेवरी-संग्रह) 3. इतिहास घायल है (तेवरी-संग्रह) 5-एक प्रहार: लगातार (तेवरी संग्रह)
स्वरचित कृतियां- रस से संबंधित-1. तेवरी में रससमस्या और समाधान 2-विचार और रस (विवेचनात्मक निबंध) 3-विरोध -रस 4. काव्य की आत्मा और आत्मीयकरण
तेवर-शतक-लम्बी तेवरियां-1. दे लंका में आग 2. जै कन्हैयालाल की 3. घड़ा पाप का भर रहा 4. मन के घाव नये न ये 5. धन का मद गदगद करे 6. ककड़ी के चोरों को फांसी 7.मेरा हाल सोडियम-सा है 8. रावण-कुल के लोग 9. अन्तर आह अनंत अति 10. पूछ न कबिरा जग का हाल
शतक-1.ऊघौ कहियो जाय (तेवरी-शतक) 2. मधु-सा ला (अष्ठपदी शतक) 3.जो गोपी मधु बन गयीं (दोहा-शतक) 4. देअर इज ए ऑलपिन (दोहा-शतक) 5.नदिया पार हिंडोलना (दोहा-शतक) 6.पूजता अब छल (हाइकु-शतक)
मुक्तछंद कविता-संग्रह-1. दीदी तुम नदी हो 2. वह यानी मोहन स्वरूप **बाल-कविताएं**- 1.राष्ट्रीय बाल कविताएं
प्रसारण-आकाशवाणी मथुरा व आगरा से काव्य-पाठ
सम्मानोपाधि-'उ.प्र. गौरव', 'तेवरी-तापस', 'शिखरश्री'
अभिनंदन-सुर साहित्य संगम (एटा), शिखर सामाजिक साहित्कि संस्था अलीगढ़
पूर्व अध्यक्ष-राष्ट्रीय एकीकरण परिषद, उ.प्र.शासन,अलीगढ़ इकाई
सम्प्रति-'दैनिक जागरण' से स्वतंत्र पत्रकार के रूप में सम्बद्ध
सम्पर्क-15/109,ईसानगर,निकट-थाना सासनीगेट,अलीगढ़,उ.प्र.
मोबा. 09634551630

घड़ा पाप का भर रहा

लम्बी तेवरी (तेवर-शतक)

रमेशराज

मन की खुशियाँ जागकर मीड़ रही हैं आँख
चीर रही जो अंधकार को उसी किरन की मौत न हो। १

चाहे जो भी नाम दे इस रिश्ते को यार
जिस कारण भी प्रीति जगे उस सम्बोधन की मौत न हो। २

बड़ा हो गया आज ये दौने-पत्तल चाट
जूठन के बलबूते आये अब यौवन की मौत न हो। ३

यह डूबी तो टूटनी एक सत्य की साँस
माँग रहे सब लोग दुआएँ इस धड़कन की मौत न हो। ४

पूजा घर में हो रही सिक्कों की बौछार
प्रभु से मिन्नत करे पुजारी 'खनन-खनन' की मौत न हो। ५

तेरे भीतर आग है, लड़ने के संकेत
बन्धु किसी पापी के सम्मुख तीखेपन की मौत न हो। ६

जन-जन की पीड़ा हरे जो दे धवल प्रकाश
जो लाता सबको खुशहाली उस चिन्तन की मौन हो। ७

मन के भीतर दौड़ती बनकर एक तरंग
दुःख के बाद शाद करती जो उस थिरकन की मौत न हो। ८

घर के भीतर बढ़ रही अब दहेज की रार
हुए अभी कर जिसके पीले उस दुल्हन की मौत न हो। ९

कायर ने कुछ सोचकर ली है भूल सुधार
डर पर पड़ते भारी अब इस संशोधन की मौत न हो। १०

चूम-चूम जिस पूत को बड़ा कर रही मात
बेटा जब सामर्थ्यवान हो, इस चुम्बन की मौत न हो। ११

'लोकपाल' का अस्त्र ले जो उतरा मैदान
करो दुआएँ 'अन्ना' जैसे रघुनन्दन की मौत न हो। १२

देश लूटने एकजुट तस्कर-चोर-डकैत
सोच रहे राजा मनमोहन गठबन्धन की मौत न हो। १३

घड़ा पाप का भर रहा, फूटेगा हर हाल
ऐसा कैसे हो सकता है इस शासन की मौत न हो। १४

सब कुछ अपने आप फिर हो जायेगा ठीक
तू कर केवल इतनी चिन्ता समरसपन की मौत हो।

एक दूसरे से गले रोज मिलें सद्भाव
जो दिल से दिल जोड़ रहा ऐसे प्रचलन की मौत न हो। १५

तेरे आगे मैं झुकूँ, तू दे कुछ आशीश
तुझ में श्रद्धा रखता हूँ मैं, बन्धु नमन की मौत न हो। १६

बेटों को समझा रहे हाथ जोड़ माँ-बाप
बँटवारे के बीच खड़ा जो उस आँगन की मौत न हो। १७

वादे से मुकरे नहीं, लाये सुखद वसंत
जो नेता संसद पहुँचा है, कहो 'वचन' की मौत न हो। १८

चलो बन्धु हम ही करें घावों का उपचार
गारण्टी सत्ता कब देती चैन-अमन की मौत न हो। १९

ये बाघों का देश है, जन-जन मृग का रूप
अब तो चौकस रहना सीखो किसी हिरन की मौत न हो। २०

शंका का तम घेरता सुमति-समझ को आज
पति-पत्नी के बीच प्रेम में आलिंगन की मौत न हो। २१

'सूरदास' को मिल गया डिस्को क्लब-अनुबंध
अब डर है कुछ भक्ति-पदों की और भजन की मौत न हो। २२

उभर रहे हैं आजकल सूखा के संकेत
कली-कली के भीतर आयी नव चटकन की मौत न हो। २३

अब है खल के सामने दोनों मुट्ठी तान
बार-बार ललकार रहा जो उस 'झम्मन' की मौत न हो। २४

लिये कुल्हाड़ी साथ वे सत्ता जिनके हाथ
राजनीति के दावपेंच में चन्दन-वन की मौत न हो। २५

सुलझेंगी सब गुत्थियाँ इसके बूते यार
इसको जीवित रहना प्यारे इस उलझन की मौत न हो। २६

फूटेगी कुछ रौशनी अंधकार के बीच
शर्त यही नव तेवर वाले नव चिन्तन की मौत न हो। २७

आलिंगन के जोश को कह मत तू आक्रोश
ग़ज़लें लिख पर 'कथ्य','काफिया' और 'वज़न' की मौत न हो।

नया जांच आयोग भी जाँच करेगा खाक!
ये भी क्या देगा गारण्टी 'कालेधन की मौत न हो'। २९

जो भेजा है कोर्ट ने खल को पहली बार
जन-दवाब में रपट लिखी थी इस सम्मन की मौत न हो। ३०

'किरन', 'केजरी' 'राय' या अब 'कुमार विश्वास'
जब संसद के सम्मुख बैठें तो अनशन की मौत न हो। ३१

उठी लीबिया, सीरिया अब भारत के बीच
पकड़े यूँ ही जोर से आग ये, आन्दोलन की मौत न हो। ३२

शब्द-शब्द से और कर व्यंग्यों की बौछार
यही कामना तेवरियों में अभिव्यंजन की मौत न हो। ३३

भावों की रस्सी बना उससे खल को बाँध
तेरे भीतर के वैचारिक अब वलयन की मौत न हो। ३४

पंछी पिंजरा तोड़कर फिर भर रहा उड़ान
पुनः सलाखों बीच न आये और गगन की मौत न हो। ३५

गोकुल में भी बढ़ रहे चोर-मिलावटखोर
वृन्दावन के मिसरी-माखन, मधु गुंजन की मौत न हो। ३६

हाथ उठा सबने किया अत्याचार-विरोध
लड़ने के संकल्प न टूटें अनुमोदन की मौत न हो। ३७

जनता में आक्रोश लखि सत्ता कुछ भयभीत
पहली बार दिखायी देते परिवर्तन की मौत न हो। ३८

परिवारीजन एक हो पूजें यह त्योहार
घर में दो-दो गोधन रखकर गोबर्धन की मौत न हो। ३९

संसद तक भेजो उसे जो जाने जन-पीर
नेता के लालच के चलते और वतन की मौत न हो। ४०

केवल इतना जान ले-'प्यार नहीं व्यापार'
जुड़ा हुआ सम्बन्ध न टूटे, अपनेपन की मौत न हो। ४१

लिखा हुआ है 'हिम' जहाँ अब लिख दे तू 'आग'
इसको लेकर चौकस रहना संशोधन की मौत न हो। ४२

जिस में जन कल्याण का सुमन सरीखा भाव
चाहे जो कुछ हो जाए पर उसी कथन की मौत न हो। ४३

पूँजीपति के हित यहाँ साध रही सरकार
करें आत्महत्या किसान नहिं औ' निर्धन की मौत न हो। ४४

राजा चाहे तो प्रजा पा सकती है न्याय
बादल बरसें नहीं असम्भव बढ़ी तपन की मौत न हो। ४५

सोच-समझ कर क्रोध में कर लेना तलवार
सुख मोचन के बदले प्यारे दुःख मोचन की मौत न हो। ४६

बातें लिख शृंगार की लेकिन रह शालीन
केवल धन के ही चक्कर में सद्लेखन की मौत न हो। ४७

खूब हँसा हर मंच से नव चुटकुले सुनाय
पर दे गारण्टी आफत के आगे जन की मौत न हो। ४८

तूने मेरी शर्ट पर जो टांका भर प्यार
तेरे ही हाथों कल सजनी देख बटन की मौत न हो। ४९

अब भारी खिलवाड़ है शब्द-शब्द के साथ
हिन्दी वालों के हाथों ही हिन्दीपान की मौत न हो। ५०

कुछ तो हो सुख की नदी तरल तरंगित शाद
जो लेकर बूदें आया हो ऐसे 'घन' की मौत न हो। ५१

असुर न केवल साथ हैं इसके संग अब देख
अति बलशाली रावण सम्मुख राम-लखन की मौत न हो। ५२

महँगाई डायन डसे, कहीं मारती भूख
कुछ तो सोचें सत्ताधारी यूँ जन-जन की मौत न हो। ५३

हरियाली के दृश्य हों पल्लव और प्रसून
जिसके आते कोयल कूके उस सावन की मौत न हो। ५४

देखो दिव्य उदारता, इसका छीना प्यार
पत्नी फिर भी सोच रही है 'प्रभु सौतन की मौत न हो।' ५५

याद रखो तुम 'लक्ष्मी', 'तात्या' का बलिदान
नयी सभ्यता के अब आगे 'सत्तावन' की मौत न हो। ५६

मंजर बदला चीख में, फैला हाहाकार
किसी रात के डेढ़ बजे होते अनशन की मौत न हो। ५७

नत पूरव की सभ्यता, पश्चिम के रँग देख
टाई पेंट सूट के आगे यूँ अचकन का मौत न हो। ५८

निर्धन का धन सड़ गया गोदामों के बीच
यूँ सरकारी गोदामों में नित राशन की मौत न हो। ५९

प्रसव-समय पर नर्स ने किया नहीं उपचार
कोख-बीच यूँ ही भइया रे फिर किलकन की मौत न हो। ६०

खल के सम्मुख हो खड़ा अरे इसे ललकार
हाथ जोड़कर पाँव मोड़कर यूँ घुटअन की मौत न हो। ६१

पा लेंगे निश्चिन्त हो, भले लक्ष्य हैं दूर
सद्भावों के नेह-प्यार के बस इंजन की मौत न हो। ६२

सच को सच ही बोलना बनकर न्यायाधीश
हीरा को हीरा ही कहना, मूल्यांकन की मौत न हो। ६३

तू यह भी कल देखना मिटें सकल संताप
जहाँ तक्षकों की आहुतियाँ वहाँ हवन की मौत न हो। ६४

इन्हें न आये रौंदने कोई बर्बर जाति
जहाँ कर रहे फूल सभाएँ, सम्मेलन की मौत न हो। ६५

हाँ में हाँ मिलना रुके, झुके न सर इस बार
बन्धु किसी पापी के आगे 'न''न''न' की मौत न हो। ६६

छन्द और उपमान को सच का बना प्रतीक
मूल्यहीन रति के चक्कर में काव्यायन की मौत न हो। ६७

बना गये हैं पुल कई मिल घोटालेबाज
उद्घाटन के समय यही डर 'उद्घाटन की मौत न हो'। ६८

अब केबल 'ओनर किलिंग' दिखती चारों ओर
प्रेमी और प्रेमिका के पावन बन्धन की मौत न हो। ६९

चीरहरण जिसने किया लूटी द्रौपदि लाज
ऐसा क्यों तू सोच रहा है दुर्योधन की मौत न हो। ७०

सिस्टम लखि बेचैन है तू भी मेरी भाँति
तेरे भीतर घुमड़ रहा जो उस मंथन की मौत न हो। ७१

रावण मिलने हैं कई जिनका होना अंत
रोक न टोक न रघुनंदन को राम-गमन की मौत न हो। ७२

दुश्मन से लड़ हो फतह यही बहिन की सोच
लगे न कहीं पीठ पर गोली यूँ वीरन की मौत न हो। ७३

अश्व सरीखा हिनाहिना मत देना तू बन्धु
खल के सम्मुख सिंह सरीखे सुन गर्जन की मौत न हो। ७४

भय से बाहर तू निकल कान्हा बनकर देख
यह कैसे मुमकिन है प्यारे फैले फन की मौत न हो। ७५

मंत्रीजी का फोन सुन श्रीमानों में द्वन्द्व
चयनकमेटी के द्वारा अब सही चयन की मौत न हो। ७६

युद्ध और जारी रहे इस सिस्टम के साथ
असंतोष-आक्रोश भरे इस शब्द-वमन की मौत न हो। ७७

तू जग का कल्याण कर, तू है शिव का रूप
तूने खोला उसी 'तीसरे' आज 'नयन' की मौत न हो। ७८

जो है सच की राह पर उसका देंगे साथ
चूक न हो जाये अब साथी दुःख-भंजन की मौत न हो। ७९

जिससे यौगिक टूटकर बन जाना है तत्त्व
लेकर जो आवेश चला है उस आयन की मौत न हो। ८०

पृष्ठ-पृष्ठ घोषित हुआ जिस में धर्म अफीम
उस किताब को पूरी पढ़ना, सत् अध्ययन की मौत न हो। ८१

जिसमें दबकर मर गये कई जगह मजदूर
ऐसे बनते फिर बहुमजिल किसी भवन की मौत न हो। ८२

दास-प्रथा की तोड़ने जो आया ज़ंजीर
फिर भारी षड्यंत्र हो रहे, फिर लिंकन की मौत न हो। ८३

फिक्सिंग का ये दौर है, बस पैसे का खेल
सट्टेबाजी के चक्कर में 'मैराथन' की मौत न हो। ८४

शदर पवारो, सिब्बलो, अरे दलालो और
महँगाई डायन के मुँह में पिस जन-जन की मौत न हो। ८५

नेता के सुत ने किया अबला के सँग 'रेप'
रपट लिखाने के चक्कर में अब 'फूलन' की मौत न हो। ८६

जैसे हो ज़िन्दा रखो मर्यादा का ओज
आचरणों की कामवृत्तिमय नव फिसलन की मौत न हो। ८७

जो रिश्तों के बीच में रहे खाइयाँ खोद
और उन्हीं को भारी चिन्ता 'अपनेपन की मौत न हो'। ८८

यही समय का खेल है सदा न रहती रात
कालचक्र के बीच असंभव कटु गर्जन की मौत न हो। ८९

संशय से बाहर निकल दिखे नूर ही नूर
चाहे क्यों केवल यह प्यारे तंग ज़हन की मौत न हो। ९०

प्रतिभाओं के सामने नकल न जाए जीत
कुंठा पाले ज्ञान नहीं अब औ' 'एवन' की मौत न हो। ९१

तू मनमोहन है अगर मंत्री-पद के साथ
कूड़े से खाना बटोरते सुन बचपन की मौत न हो। ९२

चोट आस्था पर पड़े सहता धर्म कलंक
पावन-स्थल ईश्वर के घर सुन्दर 'नन' की मौत न हो। ९३

झांसी की रानी लिए जब निकली तलवार
कुछ पिट्ठू तब सोच रहे थे 'प्रभु लंदन की मौत न हो। ९४

सिर्फ 'खबर' होते नहीं जनता के दुख-दर्द
पत्रकारिता कर ऐसी तू 'सत्य','मिशन' की मौत न हो। ९५

'झिंगुरी','दातादीन' को जो अब रहा पछाड़
'होरी' के गुस्सैले बेटे 'गोबरधन' की मौत न हो। ९६

सारे दल ही दिख रहे आज कोयला-चोर
मनमोहन की फाइल में जा यूँ ईंधन की मौत न हो। ९७

जिसके भीतर प्यार के कुछ पावन संकेत
बड़े दिनों के बाद दिखी ऐसी चितवन की मौत न हो। ९८

लिया उसे पत्नी बना जिसका पिता दबंग
सारी बस्ती आशंकित है अब हरिजन की मौत न हो। ९९

भरी क्लास में कर रहा दादागीरी झूठ
इस कक्षा का सच है टीचर, अध्यापन की मौत न हो।१००

इस कारण ही तेवरी लिखने बैठे आज
किसी आँख से बहें न आँसू, किसी सपन की मौत न हो। १०१

यही चाहता देश में एक तेवरीकार
चलती रहे क्रिया ये हरदम अरिमर्दन की मौत न हो। १०२

रस-परम्परा में एक नये रस की खोज

विरोध-रस

शोधकर्त्ता-रमेशराज, कृतिमूल्य-सौ रुपये

विरोध-रस क्या है?

जब किसी आश्रय में तिरस्कारादि के कारण स्थायी भाव, 'आक्रोश' जाग्रत होता है तो वह आलंबनों के प्रति केवल असहमति ही व्यक्त नहीं करता, बल्कि उसके अनुभावों में धिक्कारना, अपशब्द बोलना, निंदा करना स्पष्ट दृष्टिगोचर होने लगता है, जो अन्ततः विरोध-रस की निष्पत्ति का सूचक है।

'विरोध-रस' विद्वानों की दृष्टि में-

कुछ भाव तो ऐसे हैं कि आलंबन बदल जाने से वे स्वतः स्वतंत्र रूप धारण कर लेते हैं। 'प्रेम' ऐसा ही मानो सत्य है। कुछ संचारी भी इतने सशक्त हो जाते हैं कि रस का परिपाक हो जाता है। परम्परत रूप से आपके द्वारा प्रवत्त **'विरोध-रस'** रौद्र रस के अन्तर्गत आता है, परन्तु वह विरोध जिसमें व्यवस्था के प्रति अथवा किसी सामाजिक बुराई के प्रति गुस्सा या 'आक्रोश' होता है, वह व्यक्तिगत क्रोध से सर्वथा भिन्न है।... आपकी स्थापना से एक स्पष्ट मार्ग प्रशस्त होता है। -**डॉ. परमलाल गुप्त**

'विरोध-रस' पर सार्थक चर्चा चल रही है। अनवरत प्रयास निकट भविष्य में रंग दिखायेगा।-**डॉ. विष्णु शास्त्री 'सरल'**

'विरोध-रस' पर किसी को आपत्ति नहीं होनी चाहिए।... इससे साहित्य की परंपरा विकसित होगी -**डॉ. हरेराम पाठक**

'विरोध-रस'- खूब! आपके कार्य शोधपरक। -**अशोक अंजुम**

'विरोध-रस' के 'अनुभाव', 'विभाव', 'संचारी भाव' पर शोधपरक लेख पठनीय।-**डॉ. शारदा प्रसाद 'सुमन'**

'विरोध-रस' पर सामग्री उत्तम। -**डॉ. गणेशदत्त सारस्वत**

'विरोध'शास्त्रीय दृष्टि से रस ही है।-**डॉ. नटवर नागर**

विरोध-रस शोधपरक। -**डॉ. ज्ञानवती दीक्षित**

'विरोध-रस' की नयी अवधारणा और उसके विविध शास्त्रीय पक्षों की व्याख्या उत्साहवर्द्धक। आपका यह प्रयास हिन्दी जगत की सामयिक हलचलों में सम्मिलित किया जाना चाहिए। -**कृष्णकांत 'एकलव्य'**

शोधार्थियों के लिये एक महत्वपूर्ण पुस्तक

विचार और रस

(रस-निष्पत्ति का वैचारिक विवेचन)

लेखक-रमेशराज

राष्ट्रीय बाल कविताएँ

कवि-रमेशराज

प्राप्ति स्थल-बजरंग प्रकाशन, सागरपुर, दिल्ली

महत्वपूर्ण तेवरी संग्रह

(१) अभी जुबां कटी नहीं	संपादक-रमेशराज
(२) कबीर ज़िन्दा है	संपादक-रमेशराज
(३) इतिहास घायल है	संपादक-रमेशराज
(४) एक प्रहारः लगातार	तेवरीकार-दर्शन बेज़ार
(५) देश खण्डित हो न जाए	तेवरीकार-दर्शन बेज़ार
(६) ये ज़ंजीरें कब टूटेंगी	तेवरीकार- दर्शन बेज़ार

सार्थक-सृजन, १५-१०९, ईसानगर,
निकट-थाना सासनीगेट, अलीगढ़